REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 12 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2022

लक्ष्मीकांत वर्मा जी के उपन्यासों का अध्ययन

लक्ष्मी वर्मा[1] , डॉ. समय लाल प्रजापति[2]
[1]शोधार्थी हिन्दी, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)
[2]सह–प्राध्यापक हिन्दी, शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

सारांश –

लक्ष्मीकांत वर्मा जी ने हिन्दी साहित्य में एक सफल गद्यकार के रूप में अपने को प्रतिष्ठित किया है, उनमें हिन्दी गद्य लेखन की अप्रतिम क्षमता थी। वे गद्य को पद्य की अपेक्षा अधिक स्वाभाविक मानते थे। उनके साहित्य में यथार्थ का सत्य चिन्तनशील पाठकों को आकर्षित करता है। वर्मा जी को गद्य साहित्य में असाधारण मनोवैज्ञानिकता, ऐतिहासिकता, अनुभूति की तीव्रता, चिन्तन क्रम की स्पष्टता और सरस अभिव्यक्ति की समायोजना से एक सफल गद्यकार के रूप में स्थापित किया है।

मुख्य शब्द – लक्ष्मीकांत वर्मा, हिन्दी साहित्य, गद्यकार, मनोवैज्ञानिकता एवं ऐतिहासिकता।

प्रस्तावना –

लक्ष्मीकांत वर्मा जी का सृजन बहुआयामी है। लगभग सभी विधाओं की उत्कृष्ट एवं वरेण्य कृतियो का प्रणयन उनके द्वारा सम्पन्न हुआ है। उनके द्वारा उपन्यास, नाटक, कहानी, आलोचना और पत्र–पत्रिकाओं में कई लेख किये गये। वर्मा जी का बहुत सा साहित्य जो उनके द्वारा लिखा तो गया पर प्रकाश में अभी तक नहीं आया, विलुप्त प्रायः सा बना हुआ है। वर्मा जी का जितना प्रकाशित साहित्य है, उतना ही अप्रकाशित साहित्य उनके घर में पड़ा नष्ट हो रहा है। यह पाठकों के लिये एक दुर्भाग्य का विषय है कि वह साहित्य उनके लिये अनछुआ बना रहा। लक्ष्मीकांत वर्मा जी की साहित्यिक उपलब्धियों को देखकर यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि वर्मा जी का जीवन साहित्य के लिये पूर्णतया समर्पित था।

उपन्यास –

लक्ष्मीकांत वर्मा जी के उपन्यासों को हम दो भागों में वर्गीकरण कर सकते हैं –

1. मनोवैज्ञानिक वर्ग
2. ऐतिहासिक वर्ग

सामाजिक यथार्थ के मनोविज्ञान के उपन्यास खाली कुर्सी की आत्मा, टेराकोटा, कोयला और आकृतियां, एक कटी हुयी जिन्दगी : एक कटा हुआ कागज, सफेद चेहरे, तीसरा प्रसंग उपन्यास आते हैं। ऐतिहासिक उपन्यासों की श्रेणी में मुंशी रायजादा का नाम आता है। लक्ष्मीकांत जी एक सामाजिक विचारक थे। उन्होंने राजा राम मोहन राय की तरह या दयानंद सरस्वती की तरह कोई सामाजिक आन्दोलन नहीं चलाया। वह मूलतः साहित्यकार थे। इसलिये उन्होंने समाज की मनोदशा का वर्णन साहित्य में किया है। साहित्यकार की

प्रवृत्ति रमण की होती है। वह मस्तिष्क के स्तर पर समाज के पात्रों के बीच में जाकर उनकी जिन्दगी को जीने का प्रयास करता है और फिर उसी को अपने साहित्य में उकेर देता है। लक्ष्मीकांत जी ने दो युगों के संक्रमण को देखा है। इस संक्रमण काल में संस्कृति पर घात प्रतिघात होता है। विशेषकर जब गुलामी के बाद आजादी मिलती है या आजादी के बाद गुलामी इस मानसिक स्थिति में संस्कृतियो की टकराहट होती है। मानव स्वभाव पुराने को छोड़कर नये की तरफ भागता है, लेकिन जो संस्कार जो परम्परा उसमें रहती है वह आसानी से पीछा नहीं छोड़ती है। इसीलिये यह संक्रमण काल कहलाता है। समाज का निर्माण केवल स्त्री और पुरूष से नहीं होता है बल्कि समाज में स्त्री और पुरूष की जीवन शैली, उसकी मानसिकता, उसका विकास क्रम यह सब भी शामिल होता है।

लक्ष्मीकांत जी ने इन सारे उपन्यासों के केन्द्र में मनुष्य की जिज्ञासा, जिजीविषा, स्वतंत्रता की भावना और स्वतंत्र व्यक्तित्व के लिये भटकते लोगों का चरित्र लिया है। भारत एक सांस्कृतिक मूल्यों वाला देश रहा है। 18वीं शताब्दी से जो स्वतंत्रता की अतृप्त प्यास जगी उसमें केवल राजनैतिक स्वतंत्रता ही केन्द्र में नहीं थी। अपितु आर्थिक और सामाजिक स्वतंत्रता के साथ–साथ वैयक्तिक स्वतंत्रता को भी अंगीकार किया गया। मनोविज्ञान की दृष्टि से वैयक्तिक स्वतंत्रता मनुष्य के विकास क्षमता को कई गुना बढ़ा देती है लेकिन यह उच्छृंखल भी बनाती है, इसका भय ज्यादा रहता है।

खाली कुर्सी की आत्मा –

यह लक्ष्मीकांत वर्मा जी का प्रथम उपन्यास है, जिसमें सामाजिक क्षेत्र से कथानक का चयन किया गया है। इसमें जीवन का यथार्थ मुखरित होता है। 1960 के दशक के प्रारम्भिक दिनों में जब यह उपन्यास प्रकाश में आया, उस समय आजादी अपनी शैशवा अवस्था में थी। सदियों के गुलामों को जब नयी–नयी आजादी और नये–नये ओहदे मिले तो पश्चिम की सभ्यता की चमक में उन्होंने अपने सम्पूर्ण व्यक्तित्व को ही बदल डाला। यह उपन्यास आजादी की शैशवा अवस्था की मनोवृत्ति को प्रतिबिम्बित करता है। वर्मा जी ने टूटी कुर्सी को केन्द्र बिन्दु में रखकर विभिन्न पात्रों के माध्यम से एक सफल अभिव्यक्ति का प्रयास किया है।

यह उपन्यास तेरह खण्डों (1) खाली कुर्सी की आत्मा (2) लोहे के खिलौने और काठ की बन्दूकें (3) ज्योतिष चक्र और नंगी तलवारें (4) वेटिंगरूम के लोग और टूटी हुयी जिन्दगियां (5) शायर और भूगोल की रेखाएं, (6) मवेशी डाक्टर बनडोले और घड़ियों की आवाज में कैद आयोजन–नियोजन और रोमान्स इत्यादि (7) राख के पुतले में लोहे का अभाव (8) वेटिंग रूम के लोग और टूटी जिन्दगियां (9) आदमी और चूहे : एक प्रयोग(10) अधूरा आदमी और कैक्टस के फूल (11) एक लोहे का खिलौना जो जेबी भगवान बन गया, (12) ग्रेट इण्डिया सर्कस और महामानवों की टोली (13) वेटिंग रूम के लोग और टूटी जिन्दगियां में विभक्त है। यह तेरह खण्ड कुर्सी के जीवन के तेरह पढ़ाव है जो क्रमबद्ध रूप से चलते रहते हैं। इस उपन्यास का नायक व्यक्ति नहीं बल्कि एक कुर्सी है, यह कुर्सी तीन टांग और एक हाथ की है। यह कुर्सी एक फौजी कर्नल के घर से घूमते–घूमते हवलदार के घर, रेलवे स्टेशन, रेलवे अस्पताल में पहुँचती है।

'खाली कुर्सी की आत्मा' के कथानक को वर्मा जी ने ऐतिहासिक रूप से प्रस्तुत किया है, इतिहास के पात्रों की भांति एक–एक खण्ड मानव जीवन की एक–एक गुत्थियों को उजागर करता है और सुलझाने का भी प्रयास करता है, यही कारण है कि यह उपन्यास पाठक की जिज्ञासा को शुरू से अंत तक बनाये रखने में सफल होता है।

सफेद चेहरे –

लक्ष्मीकांत वर्मा जी का यह उपन्यास भारत की सामाजिक, मानसिक, सांस्कृतिक विसंगतियों में जीने वाले मर्द औरत के जीवन का दर्पण है। यह दर्पण उनके जीवन के यथार्थ स्वरूप से परिचित कराता है। वर्मा जी का यह सर्वथा नये टेक्नीक का उपन्यास है। काफी हाउस की आठ शामें, उन आठों शामों में सभी उपन्यास के पात्र शाम को काफी हाउस में मिलते हैं। उपन्यास का प्रमुख चरित्र बी.के. है, जो समाज की आज की विसंगतियों से जूझता है। वह अपनी सारी स्थिति को पत्रों में लिखता है और वे खत ही उपन्यास का कथानक बनते हैं।

लक्ष्मीकांत वर्मा जी ने इस उपन्यास की कथा के माध्यम से आज की तार–तार होती सामाजिक व्यवस्था पर व्यंग्य किया है। नाजायज बच्चे, स्त्री–पुरूष प्रसंग नारी की स्वतंत्रता के पीछे की मानसिकता, स्वतंत्रता की ओर से उच्छृंखल नारी की सजायाफ्ता स्थिति से उत्पन्न अराजकता, आत्महत्या, होटल की संस्कृति से उपजती विसंगति पूर्ण स्थिति, जातीय संघर्ष और उससे पैदा हुई स्थिति, उच्चवर्ग की जटिल मानसिक घुटन ही हमें बी. के. के पत्रों में पढ़ने को मिलती है।

एक कटी हुयी जिन्दगी, एक कटा हुआ कागज –

यह लक्ष्मीकांत वर्मा जी का एक प्रयोगात्मक उपन्यास है जो मनुष्य की अचेतन अवस्था के मनोवैज्ञानिक पहलुओं को उभारता है और मनुष्य की अतृप्त इच्छाओं को प्रकाश में लाता है। 'वह' मूक रहता है और यही मौन स्वरूप उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व पर आधिपत्य जमा लेता है, वह भूल जाता है कि 'वह' कैसे बोलता था। यह उपन्यास एक ऐसे व्यक्ति की कहानी है जिसकी पत्नी जीवन के मध्य ही उसका साथ छोड़कर स्वर्ग लोक में चली गयी।

अधिकांश कथानक का नायक 'वह', 'निशि' और 'गूंगी' के चारों ओर घूमता है। उपन्यास की कहानी निशि की चौथी बरसी के दिन से प्रारम्भ होती है। गूंगी घर की परिचारिका है। एक अधेड़ व्यक्ति की विधुर होने पर क्या मानसिक स्थिति होती है, यही कहानी का विषय है। जब व्यक्ति के जीवन की उसके जीवन साथी का भाग कट जाता है तब कागज के समान ही जिन्दगी भी कटी हुई हो जाती है।

उपन्यास के नायक की सबसे बड़ी समस्या अभिव्यक्ति की है जो उसकी पत्नी की मृत्यु के बाद उसे सहनी पड़ती है। वह अपनी भावनाओं, अपनी इच्छाओं, अपने रागात्मक सम्बन्धों या अपने क्रोध को किसके सामने व्यक्त करें। परिचारिक भी गूंगी है वह सुन तो सकती है लेकिन शब्दों द्वारा कुछ व्यक्त नहीं कर सकती। जीवन साथी के अभाव में चुप रहना, अपने से बातें करना, उन्हीं में खोये रहना और प्रकृति की ओर उन्मुख होना ही उसकी नियति बन जाती है।

मुंशी रायजादा –

'मुंशी रायजादा' लक्ष्मीकांत जी का ऐतिहासिक उपन्यास है, जिसको लोक जीवन के धरातल पर रखा गया है। ये उपन्यास 1773 से 1857 के बीच की घटनाओं पर आधारित है, उस समय 1805 ई. में ईस्ट इण्डिया कम्पनी अपना साम्राज्य विस्तार करने में लगी हुई थी। उपन्यासिक स्थान गोरखपुर अवध इलाके का सम्पन्न क्षेत्र है। गौतम बुद्ध और नाथो की कर्मस्थली भी यही क्षेत्र था। इसलिये चीन, जापान, श्रीलंका, इण्डोनेशिया के तीर्थयात्री भी यहां आते जाते थे। यहां की नदियों के किनारे जनजातीय सभ्यता पांव पसार चुकी थी जिसमें थारूओं का चमत्कार विशेष रूप से लोकजीवन में कौतूहल बना था। इस उपन्यास की कथा के एक पात्र स्वयं वर्मा जी भी हैं।

उपन्यास के पहले खण्ड में 1805 से 1857 का इतिहास वर्णित है। मुंशी राजयदा के परिवार में किस तरह का परिवर्तन होता है। यह मुख्य कथावस्तु है। रियासतों को अपने को स्वतंत्र बनाये रखने के लिये अपने ही राज्य के षडयंत्रों का कैसे शिकार होना पड़ता है, इसका ऐतिहासिक प्रमाण इस उपन्यास में मिलता है। वर्मा जी ने इस उपन्यास के माध्यम से पुरानी ऐतिहासिक, सांस्कृतिक धरोहर और मूल जीवन शैली की ओर ध्यान आकृष्टित किया है।

यह उपन्यास अपने परिवेश में आंचलिक है लेकिन इस उपन्यास के माध्यम से पूरे अवध क्षेत्र के एक समय विशेष का इतिहास प्रस्तुत किया गया है। अगर कथानक के दृष्टिकोण से विभाजन करें तो अवध की संस्कृति, अंग्रेजी, हुकुमत के सियासी दांव और एक आदर्श व्यक्तित्व की छटपटाहट, यह तीनों इस उपन्यास के केन्द्र में हैं। इस उपन्यास के खण्ड 'एक अनाम खण्डहर', 'सोनारगढ़', 'शेष महल', 'थापनदेव', 'सत्तीमाई,' 'लक्ष्मीकांत की वापसी', 'चांदोपार, अन्तराल, सोनारगढ़ का प्रजालोक, मुंशी रायजादा अदालत में और मोह से माया तक की यात्रा आदि है।

इस उपन्यास का कथानक मुंशी रायजादा और उनकी वंशावली के इतिहास के साथ–साथ लोकजीवन और संस्कृति से जुड़ा है, जिसमें मुंशी रायजादा का व्यक्तित्व एक नायक की भांति सिद्धान्तवादी और सच्चा है,

जो अपने देश से प्रेम और फिरंगियों से घृणा करता है। इसी संघर्ष को वर्मा जी ने बड़े ही सुन्दर ढंग से एवं क्रमबद्ध तरीके से प्रस्तुत किया है।

टेराकोटा –

यह उपन्यास टेराकोटा में मिली हुई तीन प्रमुख आकृतियों के आस–पास घूमता है। इस नाटक के प्रमुख पात्र राहुल और मिति है जो कि शोध छात्र हैं। एक वैध और उसकी अंधी पत्नी और तीन लड़कियां, दो सैनिक टेराकोटा के रूप में उपस्थित है। मूलतः ये सातों अपने समय की विसंगतियों के प्रतीक हैं। उपन्यास के कथानक का प्रारम्भ व्यास जी और गणेश जी के सम्वाद से होता है, जिसमें गणेश जी महाभारत का अन्त पाण्डवों की विजय और कौरवों की हार तक सीमित नहीं मानते हैं। वह व्यास जी से कृष्ण जी की अक्षौहिणी सेना के जीवन को लेकर प्रश्न करते हैं।

टेराकोटा उपन्यास एक मनोवैज्ञानिक उपन्यास है, जिसमें मनुष्य एक ओर तो परम्परा और संस्कार से लड़ता है तो दूसरी ओर वह समाज के ताने–बाने से भी लड़ता हुआ दिखाई देता है। उपन्यास का कथानक मिति, खन्ना और रोहित के मन के भावों में गोते खाता रहता है। एक स्त्री के प्रति पुरूष का एक सहज आकर्षण सभी पात्रों को अपने इर्द–गिर्द समेटे हुये हैं। चूंकि यह उपन्यास मनोविज्ञान की आधारशिला पर लिखा गया है, इसलिये भावों का वेग हमें कई प्रश्नों के साथ आता दिखाई देता है और वार्ता के माध्यम से समाधान भी प्राप्त करता है। यही इस उपन्यास की विशेषता है। इस उपन्यास की मुख्य पात्र मिति है जो अपना सम्पूर्ण जीवन अपने परिवार और अपने बॉस मिस्टर खन्ना के दो बच्चों को पालने के लिये समर्पित कर देती है। मिति की इच्छाशक्ति की प्रशंसा गणेश जी और व्यास जी भी करते हैं। उपन्यास में मिति के जीवन संघर्ष को दिखाया गया है।

कोयला और आकृतियां –

यह एक मनोवैज्ञानिक प्रयोगवादी उपन्यास है जिसमें लक्ष्मीकांत वर्मा जी ने एक ऐसे समाज की परिकल्पना की है जो उन्मुक्त है, जिसके पास परम्पराओं से मुक्ति का पूरा एहसास है। इसके पात्र स्वयं में पूर्ण दिखायी देते हैं। हर चरित्र अपने अलग और स्वतंत्र व्यक्तित्व को जीता है। समाज में जो संस्कार और नैतिकता से जुड़े सामाजिक व्यवहार है उस परिधि को त्याग कर हर चरित्र अपना जीवन जीता दिखाया गया है। वर्मा जी ने इस उपन्यास को लिखते समय सामाजिक मूल्यों की परवाह किये वगैर इसके कथानक में एक नवीन प्रयोग किया है। वर्मा जी की लेखनी भी आशंका से ग्रसित है कि अगर इस प्रकार का समाज होगा तो कुछ नयीं विसंगतियां भी पैदा हो सकती है।

चार खण्डों का यह उपन्यास अपने प्रथम खण्ड के दो हिस्सों में पूरे कथानक का पूर्वाभास प्रस्तुत कर देता है। पूर्वाभास एक का प्रारम्भ प्रोफेसर चटर्जी की मौत से होता है। प्रोफेसर चटर्जी एक ऐसे व्यक्ति है जो स्त्री और पुरूष में कोई भेद नहीं मानते हैं। मानसिक रूप से हर बन्धन से मुक्त रहते हैं। मिसेज शर्मा, मोना, जीवन, मिसेज, बातला, मिसेज भगत ये सब सहजता से प्रोफेसर चटर्जी के पास रहा करते थे। प्रोफेसर चटर्जी और मिसेज शर्मा की नाजायज सन्तान मोना है।

इस उपन्यास में ऐसे अनेक पात्र हैं जो इस प्रकार स्वतंत्र रूप से अवैध सम्बन्धों में जी रहे हैं। समाज की परवाह किये बगैर हर पात्र एक नये उन्मुक्त व्यक्तित्व को लेकर आता है और हमारे सामने सिर्फ यह सवाल छोड़ जाता है कि क्या उन्मुक्तता का नाम ही जीवन है?

तीसरा प्रसंग –

यह उपन्यास भी मनोवैज्ञानिक प्रयोगवादी उपन्यास है। विसंगतियों की विभिन्न शाखाओं पर प्रयोग करना लक्ष्मीकांत वर्मा जी के स्वभाव में था। उपन्यास में पात्र, कथानक, घटना एक दूसरे से तादात्म्य तो रखते ही हैं, साथ ही वे प्रासंगिक और यथार्थ से लगते हैं। उपन्यास में जयन्ती, शंकर, दामोदर, केवल, मिस्टर कपूर, वीणा, दीपक, रेखा और वासन्त पात्र हैं। एक रंगीन चिड़ियां हैं जो देशकाल के साक्ष्य को प्रतीकात्मक रूप से प्रस्तुत करती हुई प्रत्येक पात्र को परिवेश के पारस्परिक सम्बन्धों को एक तीसरे अप्रस्तुत प्रसंग से जोड़ती है।

इस उपन्यास में भी मानव के अवैध सम्बन्धों से उत्पन्न जटिलताओं से घिरे स्त्री जीवन पर प्रश्न चिन्ह अंकित किया गया है। शंकर जयन्ती को कितना चाहता था। लेकिन जयन्ती उसे क्यों न चाह सकी? शंकर के अन्तर्मन में करूणा है फिर वह अपराधी क्यों बना? पांच वर्ष तक केवल के साथ विवाहित जीवन बिताने के बाद वह केवल की क्यों नहीं हो पायी? जयन्ती एक ऐसी स्त्री है जो केवल, दामोदर और मिस्टर कपूर से सम्बन्धित रही थी। ये तीनों पुरूष पात्रों ने उसकी तरफ कभी मुड़कर नहीं देखा। शंकर को वह अपने आस–पास ही पाती थी, जिसकी उसने सदैव उपेक्षा की थी। वीणा जयन्ती की पुत्री है पर उसका पिता कौन है यह भी इस उपन्यास में में एक विवाद का विषय है। वीणा अपने को केवल की पुत्री मानती थी, जो गलत था। वह दामोदर की पुत्री थी, यह बात उसकी मां ने उससे छिपाकर रखी थी। वर्मा जी का यह उपन्यास विसंगतियों से भरा हुआ है। उन्होंने इसका सुखद अंत करने का सफल प्रयास किया है।

लक्ष्मीकांत वर्मा जी के सभी पात्र अपने में अलग व्यक्तित्व को लेकर जीवन जीते हैं। उन्हें किसी एक वर्ग में नहीं बांधा जा सकता। 'खाली कुर्सी की आत्मा' में कुर्सी जो कि उपन्यास का सबसे मुख्य पात्र है। वह हमें जीवन से जुड़े समस्त पहलुओं का यथार्थ प्रस्तुत करती है। उसके सम्पर्क में आने वाले सभी व्यक्तित्व कहीं न कहीं समाज से जुड़ी संवेदना को आहत करते दिखाये गये हैं। कुर्सी अपने जीवन के आखिरी पड़ाव में भी समाज के कुरूप चेहरों को रेखांकित करती हुई प्रतीत होती है।

लक्ष्मीकांत वर्मा जी का सफेद चेहरे उपन्यास का मुख्य पात्र बी.के. है। इस उपन्यास के पात्र विसंगतियों को जीवन्तता से जीते हैं और अन्त में सभी पात्र एक–एक टूटे मूल्यों के नासूर की पीड़ा भोग रहे हैं। हर पात्र एक–एक विसंगति की पीड़ा को दूसरे से बांटते हैं। बी.के. के पत्र उनकी अभिव्यक्ति का माध्यम बनते हैं अनुज वाचक है। बी.के. के सारे पत्र कथानक के रूप में सामने आते हैं और उसी से बी.के. सारी विसंगतियों को उजागर करता है यह उपन्यास अनेकों पात्रो से भरा हुआ है। बी.के. पुरूषोत्तम मटियानी, कुर्सी नं. 5, मि. अनुज, मैरून, फीएट, मीनाक्षी, मीनाक्षी की मां, रामी धोबिन, मिसेज सैम्सन, जेलर (मि. भल्ला), ममता, विनती आदि प्रमुख पात्र है।

एक कटी हुयी जिन्दगी एक कटा हुआ कागज उपन्यास नायक वह निशि और गूंगी के इर्द–गिर्द घूमता रहता है। एक अधेड़ व्यक्ति के विधुर होने की मानसकिता पात्र वह के माध्यम से प्रस्तुत की गयी है।

लक्ष्मीकांत वर्मा जी के प्रायः सभी पात्र गतिशील है क्योंकि परिस्थितियां उन्हें जहां ले जाती है, वे वहीं खिंचते चले जाते हैं, जैसे खाली कुर्सी की आत्मा की कुर्सी हो, चाहे सफेद चेहरे का बी.के. या फिर तीसरा प्रसंग की जयन्ती। टेराकोटा की मिति भी गतिशील पात्र है। मिति का घर देहरादून में है। वह दिल्ली में सर्विस करती है। आई.ए.एस. की नौकरी की ट्रेनिंग के लिये वह इलाहाबाद जाती है। वह स्थिर नहीं रहती है। स्थान परिवर्तन के साथ–साथ ही उसके जीवन में भी काफी उतार चढ़ाव आते रहते हैं।

कोयल और आकृतियां उपन्यास के पात्र एक स्वच्छन्द व्यक्तित्व को जीते हैं। हर पात्र अपने में पूर्ण प्रतीत होता है। पात्रों के माध्यम से वर्मा जी ने इस तरह के जीवन पर एक प्रश्न चिन्ह छोड़ा है कि ''क्या उन्मुक्तता का नाम ही जीवन है?

'मुंशी रायजादा के पात्र हेलेन और लक्ष्मीकांत दो संस्कृतियों के मिलन की बात तो करते ही हैं, साथ ही उपन्यास के इतिहास की पृष्ठभूमि को लिखते भी हैं। 'मुंशी रायजादा' अपने क्षेत्र के विराट स्वरूप के प्रतीक थे। 'खाली कुर्सी की आत्मा', टेराकोटा, कोयला और आकृतियां, एक कटा हुआ कागज, एक कटी हुयी जिन्दगी और तीसरा प्रसंग में जिस प्रयोगधर्मिता को एकदम नये संदर्भ में लक्ष्मीकांत जी ने प्रस्तुत किया है, उससे इस उपन्यास की शैली एकदम भिन्न है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि वर्मा जी के उपन्यासों के पात्र जीवन के हर पहलू को उजागर करते हैं। जीवन की विसंगतियों से लड़ने वाले ये पात्र, सजीव और निर्जीव होने के बावजूद भी जीवन का यथार्थ, बड़ी मर्मता से बता रहे हैं।

देश काल और वातावरण –

उपन्यासों में देशकाल का चित्रण महत्वपूर्ण स्थान रखता है क्योंकि यह कथानक के साथ–साथ सामाजिक परिस्थितियों से भी परिचय कराता है। देशकाल के अन्तर्गत उन सब सामाजिक, आर्थिक, और राजनीतिक प्रवृत्तियों का चित्रण अभीष्ट है जो उपन्यास की परिस्थितियों को प्रभावित करती है। वर्मा जी के

उपन्यासों में देश की गुलामी, स्वतंत्रता के बाद की स्थिति और उससे उत्पन्न विसंगतियों को खुलकर प्रकाश में लाने का प्रयास किया गया।

विश्लेषण –

'खाली कुर्सी की आत्मा' में कुर्सी प्राचीन और वर्तमान के सामाजिक वातावरण पर प्रकाश डालते हुए कहती है – प्राचीनकाल में लोग आसन जगाते थे। सिद्धि के लिये यह आवश्यक समझते थे, लेकिन आज के युग में किसी भी लेखक का कोई भी आसन नहीं। सब झंडा और पताके की सिद्धि की चिल्ल पो मचाये हुए हैं। हर लेखक की तस्वीर, चाक गरेबां, मुट्ठी, ताने ,दांत बाये, चिल्लाने वाले उखमज की तस्वीर हैं, दंगली जवान महाबीरी लगाकर लाल लगोंटी कसे, अखाड़े में जै–जै की ध्वनि से आसमान गुंजा रहे हैं – शक्ति दिखलाने की अपेक्षा पहलवानी में विश्वास करते हैं, लगता है इनके नारों में जै–जै की ध्वनि में एक खरीदी हुई लाउडस्पीकर की आवाज है जिसका अर्थ है तुम सुनो चाहे न सुनो लेकिन मैं तुम्हारे कानों मे यह गर्म सलाखें डालूंगा .... इस पिघले हुये तपते फौलाद को तुम्हारे कानों में डालने का मेरा अधिकार है। फिर ऐसे युग में आसन की क्या कदर – कुर्सी की क्या कीमत।[1]

तीसरा प्रसंग उपन्यास में विवाहेतर सम्बन्धों को और उनकी परिणिति को दिखाया गया है, लेखक ने इसे आज के सामाजिक परिवेश से जोड़ते हुए मिस्टर कपूर के माध्यम से जयंती को समझाया जो इस प्रकार है – 'हमारी यह दोहरी जिन्दगी कब तक चलती रहेगी'', ''क्यों इस तरह चलने में हर्ज ही क्या है '', 'हर्ज पुरूषों के लिये नहीं होता लेकिन शायद औरतों के लिये होता है ..... उनको इससे अधिक की जरूरत होती है .....'', ''जमाना बदल गया है ... अब यह सम्बन्ध ऐसे भी चल सकते हैं ... इसमें मै कोई दोष नहीं समझता ....।''[2]

लक्ष्मीकांत वर्मा जी ने 'टेराकोटा' उपन्यास में सामाजिक वातावरण पर प्रकाश डालते हुए महाभारत का हस्तिनापुर और आज की दिल्ली की दशा की तुलना की है – मिति के इस प्रश्न ने जैसे रोहित की सारी संवेदना को झकझोर दिया। अपने प्रयोगशाला में बैठा–बैठा मिति के इस वाक्य पर उठ खड़ा हुआ। उन टूटे खिलौनों में से एक स्त्री की मूर्ति को हाथ में लेकर टहलते हुए बोला, मुझे कोई फर्क नहीं लगता मिति ..... महाभारत का हस्तिनापुर और आज की दिल्ली दोनों में ही मूल्यों के स्तर पर मुझे कोई परिवर्तन नहीं दिखता .... आज भी दिल्ली में आदमी सन्त्रस्त है, टूटा हुआ है, क्षत–विक्षत है, पंगु है .... फर्क केवल इतना है कि आज की पंगुता मानसिक है और आज से पहले हस्तिनापुर की पंगुता कायिक थी।[3]

वातावरण में प्रकृति चित्रण का विशेष स्थान रहता है और प्रकृति चित्रण द्वारा वातावरण को सजीव बनाने में वर्मा जी सिद्धहस्त थे। यथा – ''दूर क्षितिज तक फैली धान की धानियां हरियाली वैसे भी भली लग रही थी। बीच–बीच में पानी पर तैरते कीड़ों मकौड़ों का शिकार करने के लिये सफेद बगुले उस हरियाली में उठते उमड़ते ज्वार से लगते थे।[4]

मुंशी रायजादा की ही तरह तीसरा प्रसंग में भी वर्मा जी ने प्रकृति चित्रण द्वारा वातावरण में चेतना का संचार किया यथा– ''चारों ओर पहाड़ियों से घिरी यह झील इतनी सुन्दर लग रही थी कि उसका नीला जल, कमल के फूलों से भरा हुआ वक्ष, तरह–तरह की रंगीन पहाड़ी चिड़ियों का झुण्ड यह सब का सब जैसे सारे मन को एक विवश आवेग में ले जाकर छोड़ देते थे। क्षण भर के लिये मैं यह भूल जाती थी कि मैं कहां हूँ?[5]

उपन्यास का वातावरण वेश–भूषा पर भी निर्भर करता है। मुंशी रायजादा उपन्यास में मुंशी नौबतराय की वेश भूषा का वर्णन इस प्रकार किया है – 'मुंशी रायजादा खानदान के आखिरी रायजादा ही, इस खानदान की और खण्डहरों की रक्षा करने वाले थे। चेहरा तो घिसा–पिटा हो गया था, लेकिन रईसी का अंदाज अभी तक बाकी था। पक्के तांबे के रंग वाले चेहरे पर दाढ़ी थी। कंधो तक दराज गेसू थे। मटमैला आंखों में चमकता सुरमा। खानदान में खस के साथ रखे कुछ पान। दायें हाथ की चारों उंगलियों में मामूली रंगीन शीशों की नगदार पीतल रांगे की अंगूठियां। माणिक, मोती, और मूंगे के दिन तो लद ही गये थे। फिर भी इन नकली, कांच की अंगूठियों से काम चल जाता था। नवम्बर महीने में भी मुंशी नौबतराय ने कुर्ता चिकेन का ही पहन रखा था। लेकिन ऐसा लगता था। मानों महीनों से वह धुला नहीं है। कहीं–कहीं चूहों ने कुर्ता कुतर दिया था, तो क्या हुआ था तो लखनऊ का असली चिकेन। उसे छोड़कर दूसरा पहनें भी क्या मुंशी नौबतराय।[6]

इसी प्रकार खाली कुर्सी की आत्मा में स्थान, वेशभूषा, पात्र और घटना यह सब चीजें उपन्यास के वातावरण की ओर इंगित करती हुई कथानक का साधारणीकरन करने में सहायक होती है यथा – भाग्य की

बात तांगा जब एक झटके के साथ खड्ड में गिर रहा था। उनकी श्वेत साड़ी तांगे में इस प्रकार फंस गयी कि वह भी उसके साथ–साथ ठीक उसी प्रकार घसिट गयी जैसे गठ बन्धन के बाद कुलवधू अपने पति के पीछे–पीछे घसिट जाती है। स्थूलकाय दिव्या देवी के शरीर पर अब तक कई खरोंच लग गयी थी। चमड़े की जिल्द कट चुकी थी। माथा फूट गया था। ठुड्ढी पर घाव लग गया था और उनकी वह कुरूपता जिसे वह सदैव अपने मेक अप और सादगी में छिपाये रहती थी। प्रकट और स्पष्ट हो गयी। लोहू–लोहान चण्डिका की भांति लट बिखरे वह तांगे के एक ओर पड़ी थी। दूसरी ओर ज्वाला पड़ा सिसक रहा था।[7]

लक्ष्मीकांत वर्मा जी ने अपने उपन्यासों में देशकाल वातावरण कथानक के अनुरूप प्रस्तुत किया है। यही वजह है कि कथानक हमें सत्यकथा सा प्रतीत होता है।

प्रत्येक साहित्यकार का कुछ न कुछ उद्देश्य होता है। वह प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से उनकी रचना में निहित रहता है। साहित्यकार जीवन का पर्यवेक्षक ही नहीं, दार्शनिक भी होता है। जीवन के प्रति उसका दृष्टिकोण उसकी कृतियों के माध्यम से संसार के सामने आता है। वर्मा जी के जीवन सम्बन्धी दृष्टिकोण उनके उपन्यासों में व्यक्त हुआ है।

खाली कुर्सी की आत्मा में वर्मा जी ने मानवेतर संवेदना को प्रस्तुत किया है और नायक के रूप में कुर्सी को चुना और उस कुर्सी के तेरह पड़ावों के माध्यम से मानव जीवन की एक–एक गुत्थियों को सुलझाने का प्रयास किया है। यह गुत्थियां जीवन के कोरे यथार्थ को बताती है।

सफेद चेहरे उपन्यास का उद्देश्य पश्चिमी सभ्यता के दुष्प्रभाव से सचेत करना है। देश की स्वतंत्रता के फलस्वरूप अंग्रेज भारत तो छोड़ गये। लेकिन अपनी संस्कृति और अपनी भाषा यहीं छोड़ गये जो भारतीयों के मन में अपनी जड़े धीरे–धीरे करके फैलाती जा रही है, जिससे वह अपनी पहचान, अपनी संस्कृति अपनी भाषा यहां तक की अपने पारिवारिक सम्बन्धों की भी तिलांजलि देने को तत्पर हैं। इस उपन्यास द्वारा लक्ष्मीकांत वर्मा जी ने भारत की सामाजिक, मानसिक, सांस्कृतिक, विसंगतियों में जीने वाले मर्द, औरत की घटनाओं और उनके दर्दनाक परिणामों को बताकर समाज को सचेत करने का प्रयास किया।

एक कटी हुयी जिन्दगी : एक कटा हुआ कागज में लक्ष्मीकांत वर्मा ने व्यक्ति के पारिवारिक सम्बन्धों को बहुत ही सरल भाषा में कलमबद्ध किया है। कथानक का मुख्य पात्र वह अपनी पत्नी के वियोग में छटपटाता रहता है। उसको अपना जीवन निरर्थक एवं उद्देश्यहीन लगने लगता है। वर्मा जी इस कथानक में बताते हैं कि व्यक्ति के पास जो वस्तु मौजूद होती है उस समय वह उसकी कद्र नहीं करता है और जब उससे विछोह हो जाता है तो उसी वस्तु की चाह में दिन रात भटकता रहता है। यह कैसी विधि की विडम्बना है, और इसी भटकन में उसे ईश्वरीय प्रेरणा से दीन दुःखियों की सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त होता है और वह बाढ़ पीड़ितों की सेवा करते–करते अपना जीवन समाप्त कर देता है।

'मुंशी रायजादा' एक विशालकाय उपन्यास है जो 664 पेजों में समाया है। वर्मा जी ने इस उपन्यास के माध्यम से ऐतिहासिक धरोहरों के प्रति प्रेम को जाग्रत करने का प्रयास किया है। मुंशी रायजादा की पीढी अंत तक अपनी रियासती धरोहर को अंग्रेजी शासकों से बचाने का प्रयास करती है। वर्मा जी ने इस उपन्यास के माध्यम से लोक जीवन और संस्कृत पर प्रकाश डाला और मुंशी रायजादा के चरित्र को उजागर किया, कि किस प्रकार वह गृह षडयन्त्र और अंग्रेजी चालों से निर्भीक होकर संघर्ष करते हैं।

'टेराकोटा' उपन्यास की नायिका मिति नाम की लड़की मध्यमवर्गीय परिवार की है। जिस पुरूष प्रधान समाज में वह रहती है, नौकरी करती है, वह विसंगितयों से भरा है। वह इन सबके वावजूद स्वयं को बचाकर, अपने परिवार का भरण पोषण करती है, स्वयं भी सफलता की बुलन्दियों को स्पर्श करती है तथा अपने को भारतीय प्रशासनिक अधिकारी (आई.ए.एस.) के रूप में स्थापित करती है। वर्मा जी ने इस उपन्यास में एक ऐसी प्रबल इच्छा शक्ति की धनी लड़की के जीवन का कथानक प्रस्तुत करके समाज के सामने उदाहरण प्रस्तुत किया है।

'कोयला और आकृतियां' उपन्यास में वर्मा जी ने अपने मुख्य पात्र प्रो. चटर्जी और मोना के माध्यम से समाज के उस वर्ग का चरित्र चित्रण किया है, जो सामाजिक मर्यादाओं से बाहर निकलकर उन्मुक्त जीवन जीते हैं। इसमें मुख्य रूप से मनुष्य के विवाहेत्तर सम्बन्धों का समाज के ऊपर पड़ने वाले दुष्प्रभाव का सजीव चित्रण किया है।

तीसरा प्रसंग उपन्यास में स्त्री पात्र जयन्ती के जीवन की विसंगतियों का प्रभाव उसकी पुत्री पर पड़ता है। वह चाहकर भी अपने अतीत को उसके जीवन से पृथक नहीं कर पाती है और अंत में वह स्वयं अपने अतीत के पन्नों को उजागर करती है। विसंगतियां से भरा जीवन कैसा होता है? उसके क्या–क्या परिणाम होते हैं? इन सवालों को खड़ा करना और उनके परिणामों से अवगत कराना ही वर्मा जी का उददेश्य है।

निष्कर्ष –

निष्कर्षतः लक्ष्मीकांत जी के उपन्यासों में वैयक्तिक स्वतंत्रता के अमर्यादित विस्फोट की झलक सभी पात्रों में मिलती है। यही कारण है बुद्धिजीवी होने के बाद भी उनमें भटकाव की स्थिति देखने को मिलती है और यही आज का सामाजिक यथार्थ है। लक्ष्मीकांत जी अपने निजी जीवन में स्वयं भी स्वतंत्र थे। इसीलिये उनके उपन्यासों में प्रबुद्ध वर्ग की स्वतंत्रता की पीड़ा और उनका स्वयं में निर्वाहन न कर पाने का कष्ट दोनों निहित है। विद्वानों के अनुसार कथानक, पात्र, चरित्र चित्रण, कथोपकथन, वातावरण, शैली और उद्देश्य उपन्यास के मूल तत्व है। वर्मा जी के सभी उपन्यास इन मूल तत्वों की कसौटी पर खरे उतरते हैं। इस प्रकार कहा जा सकता है कि लक्ष्मीकांत वर्मा जी के अधिकांश उपन्यासों के कथानक का उद्देश्य वर्तमान में बढ़ते हुई सामाजिक विसंगतियों को रेखांकित करना है, जिसमें वर्मा जी काफी हद तक सफल भी हुए हैं।

संदर्भ –

[1] लक्ष्मीकांत वर्मा – खाली कुर्सी की आत्मा, पृष्ठ 9
[2] लक्ष्मीकांत वर्मा – तीसरा प्रसंग, पृष्ठ 21
[3] लक्ष्मीकांत वर्मा – टेराकोटा, पृष्ठ 8
[4] लक्ष्मीकांत वर्मा – मुंशी रायजादा, पृष्ठ 241
[5] लक्ष्मीकांत वर्मा – तीसरा प्रसंग, पृष्ठ 117
[6] लक्ष्मीकांत वर्मा – मुंशी रायजादा, पृष्ठ 34
[7] लक्ष्मीकांत वर्मा – खाली कुर्सी की आत्मा, पृष्ठ 195